भारतीय संस्कृति का आधार- धर्म, समन्वय और आचार

अधिवक्ता नवीन कुमार जग्गी

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। संस्कृति का साधारण अर्थ है- संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि।

भारतीय संस्कृति एक विचार, एक भाग अथवा जीवन मूल्य है जिनको जीवन में अपनाकर जीवन के विकास को प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति जीवन-दर्शन, व्यक्तिगत और सामुदायिक विशेषताओं, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान के विकास क्रम, विभिन्न समाज, जातियों के कारण बहुत विशिष्ट है। यहाँ भिन्नता-विभिन्नता सहज और स्वाभाविक है। हमारी भारतीय संस्कृति सार्वभौमिक सत्यों पर खड़ी है और इसी कारण वह सब ओर गतिशील है। किसी भी संस्कृति की अमरता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह कितनी विकासोन्मुखी है।

भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में मानव कल्याण एवं मनुष्य के सामूहिक विकास की भावना निहित है। यहाँ पर जो भी कार्य होते हैं वे बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की दृष्टि से ही होते हैं। यही संस्कृति भारतवर्ष की आदर्श संस्कृति है। भारतीय संस्कृति की मूल भावना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे पवित्र उद्देश्यों पर आधारित है, अर्थात् सभी सुखी हों, सब निरोग हो, सबका कल्याण हो, किसी को भी दुःख प्राप्त न हो, ऐसी पवित्र भावनाएं भारतवर्ष में सदैव प्राप्त होती रहें। मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही तमाम आघातों के बावजूद यह संस्कृति अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकती है।

भारतीय संस्कृति में महान् समायोजन की क्षमता है। यहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों के लोग आए और यहीं बस गए। उनकी संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति का अंग बन गईं। इसी वजह से भारतीय संस्कृति लगातार आगे बढती जा रही है।

भारतीय संस्कृति का विकास धर्म का आधार लेकर हुआ है, इसी कारण उसमें दृढ़ता है। भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र आध्यात्मिकता है, जिसका आधार ईश्वरीय विश्वास होता है। यहाँ पर भिन्न-भिन्न धर्मों और मतों में विश्वास रखने वाले लोग आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। उनकी दृष्टि में भगवान् ही इस संसार का रचियता एवं निर्माता है। वही संसार का कारण, पालक और संहारकर्ता है।

त्याग और तपस्या भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। भारतीय संस्कृति के इन प्रमुख तत्वों की वजह

से मनुष्य में धैर्य का गुण परिपूर्ण रहता है। इनके कारण मनुष्य के मन में दूसरों की सहायता एवं उनके प्रति सहानुभूति जैसे गुणों का विकास होता है और स्वार्थ व लालच जैसी बुरी भावनाओं का नाश होता है। भारतीय संस्कृति में उन्मुक्त अथवा स्वच्छंद सुख भोग का विधान नहीं है। मुक्त सुख भोग से मानव में लालच की प्रवृति का उदय होता है और व्यक्ति हमेशा असंतोषी बना रहता है। इसी वजह से भारतीय संस्कृति हर कार्य में संयम का आदेश देती है।

भारतीय संस्कृति में धार्मिक निष्ठा का भी आदर्श है। भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। वे सभी अपने-अपने धर्मों में विश्वास और निष्ठा रखते हैं और दूसरों के धर्म के प्रति सम्मान भी करते हैं। यही भारतीय संस्कृति में धार्मिक आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीन समय से ही बना हुआ है। इस विशाल देश में उत्तर का पर्वतीय भू-भाग जिसकी सीमा पूर्व में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम में सिंधु नदियों तक विस्तृत है।

इसके साथ गंगा, यमुना, सतलुज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण के वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृष्टि का सुरम्य क्षेत्र सम्मिलित है। भौगोलिक विभिन्नता के साथ इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है। इन भिन्नताओं की वजह से ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं।

अनेक विभिन्नताओं के बाद भी भारत की पृथक सांस्कृतिक सत्ता कायम रही है। हिमालय सदैव पूरे देश के गौरव का प्रतीक है। गंगा, यमुना और नर्मदा जैसी नदियों की स्तुति यहाँ के लोग प्राचीनकाल से करते आ रहे हैं। राम, कृष्ण और शिव की आराधना यहाँ पर सदियों से की जाती है। सभी में भाषाओं की विविधता जरुर है लेकिन फिर भी संगीत, नृत्य आदि के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है। यहाँ की संस्कृति में अनेकता में एकता भी स्पष्ट रूप से झलकती है। भारतीय संस्कृति स्वाभाविक रूप से शुद्ध है जिसमें प्यार, सम्मान, दूसरों की भावनाओं का मान-सम्मान और अहंकाररहित व्यक्तित्व अंतर्निहित है।

गुरु का सम्मान भी हमारी संस्कृति का ही एक रूप है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही गुरु का सम्मान किया जाता है। गुरु द्रोणाचार्य के मांगने पर एकलव्य ने अपने हाथ का अंगूठा दान में दे दिया था। भारतीय संस्कृति के अनुसार गुरु का स्थान और सम्मान भगवान् से भी बढ़कर होता है।

किंचित् परिवर्तनों के बाद भी भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरंतरता रही है कि आज भी करोड़ों भारतीय खुद को उन मूल्यों एवं चिंतन प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं और इससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

बड़ों के लिए आदर और श्रद्धा भारतीय संस्कृति का एक बहुत ही बड़ा सिद्धांत है। बड़े खड़े हों तो उनके सामने न बैठना, बड़ों के आने पर स्थान को छोड़ देना, उनको सबसे पहले खाना परोसना जैसी क्रियाओं को अपनी दिनचर्या में देखा जा सकता है जो हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं।

हम लोग देखते हैं कि युवा कभी भी अपने बुजुर्गों का नाम लेकर संबोधन नहीं करते हैं। सभी बड़ों, पवित्र पुरुषों और महिलाओं का आशीर्वाद प्राप्त करने और उन्हें मान-सम्मान देने के लिए उनके चरणों को स्पर्श करते हैं। छात्र अपने शिक्षक के पैर छूते हैं। मन, शरीर, वाणी, विचार, शब्द और कर्म में शुद्धता हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

शून्य की अवधारणा और ॐ की मौलिक ध्वनि भारत द्वारा ही संसार को दी गयी है। हमारी संस्कृति के अनुसार हमें कभी भी कठोर और अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा अपने शरीर को स्वच्छ और स्वस्थ रखना चाहिए। दूसरों को बाएं हाथ से कोई भी वस्तु देना अपमान माना जाता है। देवी-देवताओं को चढ़ाने के लिए उठाए जाने वाले फूलों को सूंघना नहीं चाहिए।

भारतीय संस्कृति एक महान जीवनधारा है जो प्राचीनकाल से सतत् प्रवाहित है। इस तरह से भारतीय संस्कृति स्थिर एवं अद्वितीय है जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी पर हैं। इसकी उदारता और समन्व्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है। एक राष्ट्र की संस्कृति उसके लोगों के दिल और आत्मा में बस्ती है। विशालता, उदारता और सहिष्णुता की दृष्टि से अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा भारतीय संस्कृति अग्रणी स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति व्यक्ति को व्यक्तित्व देती है और उसे महान् कार्यों के लिए प्रोत्साहित करती है, किंतु यह व्यक्तित्व का चरम विकास सामाजिक स्तर पर ही स्वीकार करती है।

अधिवक्ता
सर्वोच्च न्यायालय, भारत सरकार,
दिल्ली